पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.8.2013 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

अन्तरंग सभा का अधिवेशन
25 अगस्त 2013

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी व अन्तरंग सभा की वार्षिक बैठक रविवार, 25 अगस्त 2013 को सायं 3 बजे आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली-110007 में होगी। सभी सभासद समय पर पंहुचे।

-महेन्द्र भाई, महामंत्री

वर्ष-30 अंक-06 श्रावण-2070 दयानन्दाब्द 190 16 अगस्त से 31 अगस्त 2013 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.8.2013, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

॥ ओ३म् ॥

यदि आप आर्य युवा शक्ति की कार्यप्रगति की एक झलक देखना चाहते हैं तो अवश्य पधारें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

35वाँ वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन

रविवार, 1 सितम्बर 2013, प्रात: 9.00 से सांय 5.00 बजे तक

स्थान : योग निकेतन सभागार, 30-ए, रोड न.-78, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-110026

कार्यक्रम

यज्ञ ब्रह्मा: आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय

मुख्य अतिथि: श्री नवजोत सिंह सिद्धु (सांसद), **श्री जोगेन्द्र सिंह** (पूर्व निदेशक सी.बी.आई.)

अध्यक्षता: डॉ. अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष, एमेटी शिक्षण संस्थान)

विशिष्ट अतिथि: श्री जयभगवान गोयल (प्रमुख, राष्ट्रवादी शिवसेना)

ध्वजारोहण: श्री एस.डी. अग्रवाल (चेयरमैन, व्लेज फ्लेश कोरियर)

आमन्त्रित विद्वत्जन एवं आर्य नेता:- स्वामी दिव्यानन्द जी, डॉ. वागीश जी आचार्य, (गुरुकुल एटा), आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज, डॉ. महेश विद्यालंकार, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, राष्ट्रीय कवि डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, ब्र. विश्वपाल जयन्त, श्री दीनानाथ वत्रा, स्वामी धर्ममुनि जी, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, पं. माया प्रकाश त्यागी, स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती, श्री रमाकान्त सारस्वत, प्रि. रमेश चन्द जीवन, स्वामी सच्चिदानन्द जी, श्री यशपाल 'यश', श्री रामकृष्ण शास्त्री, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्री सुभाष बब्बर, श्री कृष्ण प्रसाद कौटिल्य, श्री भारतेन्दु आर्य आदि।

समारोह में सपरिवार तथा इष्ट मित्रों सहित पहुंच कर समारोह को सफल बनाएं।

: निवेदक :

डॉ.अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	**महेन्द्र भाई** राष्ट्रीय महामन्त्री	**यशोवीर आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
दुर्गेश आर्य वरिष्ठ मंत्री	**सत्यभूषण आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**रामकुमार सिंह** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	**मनोहरलाल चावला** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**कृष्णचन्द पाहूजा** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
राकेश भटनागर राष्ट्रीय मन्त्री	**आनन्दप्रकाश आर्य** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	**सन्तोष शास्त्री** राष्ट्रीय मन्त्री
गवेन्द्र शास्त्री बौद्धिकाध्यक्ष	**देवेन्द्र भगत** प्रैस सचिव	**प्रवीण आर्य** राष्ट्रीय मन्त्री

: स्वागत समिति :

स्वामी प्रणवानन्द जी	आनन्द चौहान
रामेश्वर गोयल	दर्शन अग्निहोत्री
विपिन रहेजा	चौ.ब्रह्मप्रकाश मान
मायाप्रकाश त्यागी	राजीवकुमार परम
डॉ.सुन्दरलाल कथुरिया	सुषमा सर्राफ
डॉ.वीरपाल विद्यालंकार	डॉ.डी.के.गर्ग
शशिभूषण मल्होत्रा	रवि चड्डा
कान्तिप्रकाश आर्य	मदनलाल आर्य
के. एल. पुरी	रामकृष्ण सतीजा
राजेन्द्र लाम्बा	जितेन्द्र डावर
नवीन रहेजा	सुरेन्द्र गुप्ता
सत्यानन्द आर्य	धर्मपाल सिम्बल
डॉ. ओमप्रकाश मान	बृजभूषण तायल

'वेदाविर्भाव एवं ब्रह्मादि ऋषियों द्वारा सर्गारम्भ में वेदों का प्रचार' - मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती के सक्रिय रूप से सार्वजनिक जीवन पदार्पण के अवसर पर सारी दुनियां को यह तथ्य स्मरण नहीं थे कि वेदों का आविर्भाव ईश्वर के द्वारा प्राचीन व आदि ऋषियों पर कैसे हुआ? महर्षि दयानन्द ने सत्य की खोज करते हुए पाया कि ईश्वर सत्य, चित्त व आनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, अजन्मा, अविनाशी, अनादि, अमर आदि स्वरूप वाला है। ऐसे स्वरूप वाले ईश्वर से ही सारा जगत जिसमें सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, सभी ग्रह व उपग्रह, ब्रह्माण्ड, लोक-लोकान्तर, निहारिकायें व तारा समूह आदि सम्मिलित हैं, अस्तित्व में आया है अर्थात् ईश्वर इन सबका निमित्त कारण है। बिना रचयिता के रचना कभी नहीं हुई है और न हो सकती है, अतः इस आधार पर सृष्टि के रचयिता ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध है। संसार का कोई भी छोटे से छोटा व अच्छा कार्य बिना बुद्धि के नहीं हो सकता। इतना बड़ा ब्रह्माण्ड यदि ईश्वर ने बनाया है तो वह स्वाभाविक रूप से बुद्धि व ज्ञान का अक्षय भण्डार व खजाना है। ब्रह्माण्ड के आकार प्रकार को देखकर सिद्ध होता है कि वह अनन्त है, अनन्त सत्ता सदैव अनादि ही होगी। स-आदि अर्थात जिनका आरम्भ हुआ है, ऐसी सत्तायें विनाशी व मरणधर्मा होती हैं। यदि ईश्वर अनादि न होकर आदि अर्थात् उत्पत्तिधर्मा मानें, तो जन्म लेने व मृत्यु को प्राप्त होने वाले इस ईश्वर का जनक व पिता भी स्वीकार करना पड़ेगा जिससे अनावस्था दोष उत्पन्न होगा। अतः ईश्वर अनादि व अनन्त ही सिद्ध होता है। ज्ञानपूर्वक की गई कोई भी रचना किसी चेतन सत्ता द्वारा ही सम्भव है। यह ब्रह्माण्ड क्योंकि अनन्त है, अतः ईश्वर अक्षय ज्ञान के भण्डार के साथ सर्वशक्तिमान भी सिद्ध होते हैं। ऐसा ईश्वर जब कोई भी प्राणधारी रचना यथा मनुष्यों की उत्पत्ति करेगा तो उसके जीवन निर्वाह के लिए उसे स्वाभाविक व नैमित्तिक ज्ञान अवश्य ही देगा अन्यथा उस पर यह आरोप आयेगा कि वह ज्ञान देने में अक्षम है। दूसरी ओर वह मनुष्य बिना भाषा व ज्ञान के सम्भवतः एक दिन भी जीवनयापन न कर सके। पशुओं-पक्षियों की बात और है, उन्हें ईश्वर ने इतना स्वभाविक ज्ञान दिया है कि वह अपने जीवन के सभी कार्य सरलता से कर लेते हैं। परन्तु ईश्वर ने मनुष्य में यह भेद किया है कि वह उसे प्रदत्त अल्प वा सीमित स्वाभाविक ज्ञान से अपने सभी दैनन्दिन कार्य सम्पादित नहीं कर सकते। इसके लिए नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता है। यह भाषा सहित वेद का नैमित्तिक ज्ञान ईश्वर से एक गुरू के रूप में आदि सृष्टिकालीन मनुष्यों को प्राप्त होता है।

ईश्वर ने ज्ञान की प्राप्ति के लिए पांच ज्ञानेन्द्रियां बना कर प्रत्येक मनुष्य को दी हैं। इन इन्द्रियों की सार्थकता तभी होती है जब मनुष्य को इसके साथ भाषा का भी ज्ञान दिया जाये। वर्तमान में माता-पिता अपने शिशु को भाषा का ज्ञान देते हैं जो कि पूरी प्रक्रिया प्राकृतिक एवं प्राचीन है। आदि सृष्टि में माता-पिता तो थे नहीं, अतः माता-पिता के सभी कार्य ईश्वर ने ही सम्पादित किए। उसने सभी आदिकालीन पहली पीढ़ी के मनुष्यों को स्वाभाविक ज्ञान के साथ भाषा का ज्ञान भी प्रदान किया। वेदों के आधार पर हम जानते हैं कि ईश्वर की भाषा वैदिक संस्कृत है। ऐसी ही भाषा का ज्ञान परमात्मा ने सभी स्त्री पुरूषों को सृष्टि के आरम्भ में दिया था। जिस प्रकार एक अन्तिम कारण होता है जिसका अन्य कोई कारण नहीं होता, उसी प्रकार यहां पर आदि स्त्री पुरूषों को ईश्वर ने भाषा का ज्ञान दिया यह स्वीकार करना पड़ता है। अन्य कोई विकल्प ही नहीं है। इसकी पुष्टि इसी से होती है कि संस्कृत सर्व प्राचीन भाषा है जिसका आधार वैदिक संस्कृत है। वैदिक संस्कृत मूल भाषा है जो मनुष्यों द्वारा बनाई गई नही है, अपितु ईश्वर प्रेरित या दैवीय है। जिस प्रकार हम सृष्टि से पदार्थों को लेकर उनका उपयोग कर नाना प्रकार के पदार्थों को बनाते हैं, परन्तु वह मूल पदार्थ जिनका हम उपयोग करते हैं, उन्हें हम नहीं बनाते, वह ईश्वर निर्मित हैं, इसी प्रकार मूल भाषा ईश्वर से प्राप्त होती है जिसके आधार पर उसमें परिवर्तन, अपभ्रंस, देश काल आदि कारणों से समय-समय पर विकार व परिवर्तन होते रहने से मानवी भाषायें बनतीं हैं। वैदिक आर्य विद्वानों ने भाषा की उत्पत्ति व इतिहास पर विचार करते हुए यही निष्कर्ष निकाले हैं। ईश्वर द्वारा सभी को भाषाओं का जो ज्ञान दिया गया वह उसने जीवस्थ स्वरूप से अर्थात् प्रत्येक मनुष्य के आत्मा के भीतर उसकी उपस्थिति के होने व ईश्वर द्वारा जीवात्माओं को प्रेरणा द्वारा दिया गया। जिस प्रकार हम परस्पर वाणी व भाषा द्वारा एक दूसरे को प्रेरित करते हैं, उस वाणी के पीछे आत्मा की प्रेरणा होती है, उसी प्रकार ईश्वर जीवात्मा के भीतर अपनी प्रेरणा से जीवात्मा में भाषा, उसके भावों व अर्थों का प्रकाश कर देता है। इसके होने से सभी मनुष्य आरम्भ में सभी आवश्यक व्यवहार करने में समर्थ हो जाते हैं।

भाषा के साथ मनुष्यों को ज्ञान की भी आवश्यकता है जिससे वह सत्यासत्य को जान सकें। ईश्वर है या नहीं, है तो कैसा हैं, कहां है, क्या करता है, उसका स्वरूप कैसा है?हम कौन हैं, हमारा स्वरूप कैसा है, हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है, क्यों हमारा जन्म हुआ है, हमारे जीवन का जो उद्देश्य है उसकी पूर्ति कैसे होगी, हमें अन्य प्राणियों के प्रति कैसा व्यवहार करना है, आदि अनेकानेक प्रश्न हैं, जिनका उत्तर सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न मनुष्य प्राप्त नहीं कर सकते। इसके लिए भी उसे ईश्वर की सहायता की अपेक्षा है। यह सहायता ईश्वर वेदों का ज्ञान प्रदान कर पूरी करता है। सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने चार सबसे अधिक पवित्र आत्माओं, अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद, एक-एक वेद का ज्ञान दिया। यह ज्ञान ईश्वर ने इन जीवों वा ऋषियों की आत्माओं में प्रकट किया। सृष्टि की आदि से परम्परा चली आ रही है जिसमें कहा गया है कि चारों वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं। महर्षि दयानन्द ने भी इसकी पुष्टि की है और लोगों को चुनौती दी कि जो चाहें उनकी वेद विषयक वा अन्य मान्यताओं पर वार्तालाप व शास्त्रार्थ कर सकता है। उन्होंने अपनी तरफ से सभी सम्भावित प्रश्नों के समाधानपरक उत्तर अपनी पुस्तकों में स्वयं ही दिए हैं। उनके अनुसार ईश्वर ने मनुष्यों को चार वेदों में ज्ञान, कर्म, उपासना व विज्ञान विषयों का आवश्यक ज्ञान दिया है जिसको जानकर व चिन्तन कर वह सभी प्रश्नों के उत्तर पा सकता है और वेदाध्ययन से जो मेधा व विवेक उत्पन्न होता है, उससे स्वयं विज्ञान को विकसित कर जीवन को समुन्नत कर सकता है और साथ ही विज्ञान से होने वाले अनर्थों व बुराईयों में न फंसकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

आईये, स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में वेदों के आविर्भाव एवं उसके प्रचार या व्याप्ति के बारे में जो तथ्य व रहस्यों का उद्घाटन किया है, उन्हीं के शब्दों में उन्हें देख लेते हैं। वह लिखते हैं - 'प्रथम सृष्टि के आरम्भ ने परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा, इन ऋषियों के आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया। .... ब्रह्मा के आत्मा में अग्नि आदि के द्वारा स्थापित कराया। ... जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ऋग्, यजुः, साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया। ... वे ही चार सब जीवों से अधिक पवित्रात्मा थे। अन्य, उन के सदृश नहीं थे। इसलिये पवित्र विद्या का प्रकाश उन्हीं में किया। ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं कि उन अग्नि आदि चार मनुष्यों के ज्ञान के बीच में वेदों का प्रकाश करके उनसे ब्रह्मादि के ज्ञान के बीच में वेदों का प्रकाश कराया था। इन ऋषि वचनों को पढ़कर ज्ञात होता है कि ईश्वर ने अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा चार ऋषियों वा मनुष्यों को एक-एक वेद का ज्ञान दिया। इन चार ऋषियों ने ब्रह्माजी आदि ऋषियों वा मनुष्यों के ज्ञान में वेद स्थापित किये। पूना प्रवचन अर्थात् उपदेश मंजरी पुस्तक के पांचवें प्रवचन में मनु का उल्लेख कर महर्षि दयानन्द कहते हैं कि मनु ने लिखा है कि ब्रह्माजी ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों से वेद सीख फिर आगे वेद का प्रचार किया। इस क्रम में महर्षि लिखते हैं कि प्रथमारम्भ में ईश्वर ज्ञान से इन चार ऋषियों के ज्ञान में वेद प्रकाशित हुए और उनसे ब्रह्माजी ने सीखे और पश्चात् उन्होंने सारी दुनिया भर में फैलाये, और उनसे मनुष्यों को ज्ञान प्राप्त हुआ। यहां महर्षि ने इस विषय में उठने वाली कतिपय शंकाओं का निराकरण भी किया है। वह कहते हैं कि अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा इन चार ऋषियों को वेद प्रथम प्राप्त हुए। इस पर कोई कहेगा कि ये आदि में चार ही ऋषि क्यों थे, एक या अधिक क्यों न थे, तो ये शंकायें पाचं या तीन भी होते, तब भी वनी रहती। यह अशोकवनिका न्याय होगा। पूना प्रवचन इतिहास विषयक आठवें प्रवचन में महर्षि लिखते हैं कि सबों के पश्चात मनुष्य प्राणी उत्पन्न किया गया, वे मनुष्य बहुत से थे। अन्यान्य मतों में तो दो ही मनुष्य उत्पन्न किए थे ऐसा मानते हैं सो ठीक नहीं है। कुछ आगे वर्णन है, ... आर्यावर्त में लोक संख्या बहुत हो गई, उसे न्यून करनी चाहिए, इसलिए आर्य लोग अपने साथ मूर्ख शूद्रादि अनार्य लोगों को लेकर विमान उड़ाते फिरते, जहां कहीं सुन्दर प्रदेश देखा कि झट वहीं पर बस जाते इस प्रकार सब जगत् के प्रत्येक देश में मनुष्य फैले। पूना प्रवचन के दसवें प्रवचन में महर्षि दयानन्द संक्षिप्त विद्या के इतिहास का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सबसे पहला विद्वानदेव ब्रह्मा हुआ। इसने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा चार ऋषियों के पास वेद पढ़ा। इस ब्रह्मा का पुत्र विराट्, उसका पुत्र मनु, मनु के दश पुत्र मरीचि, अत्रि, अंगिरा आदि थे। (इस उल्लेख से यह ज्ञात होता है कि आदि ऋषि ब्रह्माजी ने विवाह किया था)। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण से भी एक उद्धरण प्रस्तुत है। महर्षि प्रश्न करते हैं कि जब परमेश्वर ने पहले सृष्टि रची तब एक-एक दो-दो मनुष्यादिक जाति में रचे अथवा अनेक रचे थे?इसका उत्तर वह देते हैं कि एक-एक जाति में परमेश्वर ने अनेक-अनेक रचे हैं। एक-एक न दो-दो, नहीं। क्योंकि चिंवटी आदि जाति एक द्वीप में एक-एक दो-दो रचते तो द्वीपान्तर में वे कैसे जा सकती इत्यादिक और भी विचार आप लोग कर लेना। यहां गुरूदत्त लेखावली से मुण्डकोपनिषद् के आरम्भ में प्रस्तुत उपयोगी अंश प्रस्तुत करना प्रासंगिक है जो बताते हैं कि विद्वानों में सब से पहला विद्वान ब्रह्मा था जो कि प्रकृति के भौतिक नियमों का पूर्ण ज्ञाता और निपुण शिल्पी था। वह मनुष्य जाति का रक्षक था। उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्व को ब्रह्मविद्या सिखलाई जो कि बाकी सब प्रकार की विद्याओं से श्रेष्ठ है। अथर्व ने वही विद्या अंगिरा को, अंगिरा ने भारद्वाज सत्यवाह को और सत्यवाह ने अंगिरस को बताई। इस प्रकार यह परम्परा से चली आई है।

महर्षि के वचनों से ज्ञात होता है कि ईश्वर ने अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा, इन चार ऋषियों को एक-एक वेद का ज्ञान दिया। ब्रह्माजी पहले ऐसे आदि मनुष्य-पुरूष वा ऋषि हैं जिन्हें इन चार ऋषियों से एक-एक करके चारों वेदों का ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके पश्चात सृष्टि के आदि में जो अन्य स्त्री व पुरूष उत्पन्न हुए थे, उन्हें ब्रह्माजी ने वेदों का ज्ञान कराया। यहां यह शंका होती है कि क्या अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा ने, ब्रह्माजी को वेदों का ज्ञान देते समय या उसके बाद, अन्य-अन्य तीन वेदों का ज्ञान प्राप्त किया अथवा नहीं। हमें लगता है कि इस विषय में हमारे शास्त्र व आप्त वचन आदि उपलब्ध नहीं हैं। इसमें क्या रहस्य है?सामान्य स्थिति में हमें लगता है कि अग्नि, वायु आदि चार ऋषियों ने भी अन्य-अन्य तीन वेदों का ज्ञान प्राप्त किया होगा जो उन्हें ईश्वर से प्राप्त नहीं हुआ था। यह प्रक्रिया इस प्रकार रही होगी कि ब्रह्माजी को ईश्वरीय प्रेरणा हुई होगी कि वह उन चार ऋषियों से चार वेदों का ज्ञान प्राप्त करें और अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा ऋषियों को प्रेरणा हुई होगी कि वह ब्रह्माजी को वेदों का ज्ञान करायें। इसके लिए पांचों ऋषि एक स्थान पर, ईश्वरीय प्रेरणा से, उपस्थित हुए होगें। वैदिक भाषा का ज्ञान ब्रह्माजी सहित आदि सृष्टि में उत्पन्न सभी मनुष्यों को पहले ही जीवस्थ स्वरूप से ईश्वर ने कराया था। जिस प्रकार गुरू पाठशाला में या गुरूकुल में विद्यार्थियों को बैठाकर उनके सम्मुख स्वयं बैठकर व बोल कर उपदेश द्वारा ज्ञान कराता है इसी प्रकार पहले अग्नि ऋषि ने ब्रह्मा, वायु, आदित्य व अंगिरा को ऋग्वेद का ज्ञान कराया होगा। फिर वायु ऋषि ने ब्रह्मा, अग्नि, आदित्य व अंगिरा को यजुर्वेद का ज्ञान कराया होगा। इसी प्रकार आदित्य व अंगिरा ने अन्य-अन्य चार ऋषियों को सामवेद व अथर्ववेद का ज्ञान कराया होगा। यह स्वाभाविक है कि जब अग्नि ब्रह्माजी को ऋग्वेद का ज्ञान करा रहे होंगे तो वायु, आदित्य व अंगिरा खाली नहीं बैठे होंगे, वह भी सुन रहे होंगे और उन्हें भी ज्ञान हो गया होगा। हो सकता है कि कुछ विद्वान व पाठक हमारे इस विचार से सहमत न हों। उनसे हम अपेक्षा करते हैं कि वह इससे जुड़े प्रश्नों का समाधान करें। यहां यह भी विदित होता है कि अग्नि आदि ऋषियों ने मन्त्रोच्चार के साथ मन्त्रों के अर्थ भी बताये होगें अन्यथा उन्हें व अन्य ऋषियों को अर्थ ज्ञात न होते। अन्य ऋषियों ने भी अग्नि ऋषि का अनुसरण किया होगा। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ब्रह्मा, अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा साथ-साथ चार वेद अर्थसहित ज्ञात हुए। हम इस सम्बन्ध में विद्वानों व पाठकों की प्रतिक्रिया जानना चाहते हैं।

पांच ऋषियों के वेदज्ञ हो जाने पर, परमात्मा ने अन्य जो युवा स्त्री व पुरूष उत्पन्न किए थे, उन्हें वेदों का ज्ञान प्रदान किया जाना उनका लक्ष्य रहा होगा। क्योंकि इनमें से किसी एक या सबका खाली बैठना सम्भव नहीं था। हम अनुभव करते हैं कि इसके लिए उन सभी स्त्री-पुरूषों को पांच कक्षाओं में बांटकर एक-एक कक्षा को एक-एक ऋषि ने उपदेश-श्रवण-विधि से अध्ययन कराया होगा। और धीरे-धीरे सभी स्त्री-पुरूषों को वेदों का ज्ञान हो गया होगा। हमारा अध्ययन व विवेक हमें बताता है कि प्राचीन काल के इन मनुष्यों की शारीरिक बल व बुद्धि की क्षमता आज के मनुष्यों से कहीं अधिक थी। इसलिए उनका वेदों को स्मरण करना व समझना आज के लोगों से कहीं अधिक सरल था। इसके साथ वेदों के ज्ञान के साथ उन्हें अपने भोजन आदि का भी ज्ञान हो गया होगा। वृक्षों पर फल व गो-दुग्ध तो पर्याप्त रहा ही होगा जिससे इन आदि वासियों ने अपने आहार की समस्या का निदान किया होगा। ऋषि दयानन्द ने कहीं यह कहा है कि पांच वर्षों तक इन मनुष्यों में बालकपन के समान अवस्था थी जिससे यह अनुमान किया जा सकता है कि इस समयावधि में इनमें कामवासना आदि का विचार नहीं आया था। इस बीच इन्होंने कृषि कार्यो, गोपालन व संवर्धन, रूई से वस्त्र निर्माण आदि, जिसका ज्ञान वेदों से प्राप्त हो गया होगा, इन्होंने कर लिया होगा और पांच वर्षों में सब सामान्य रूप से पूर्णतः वेदों के अनुसार जीवन व्यतीत करने लगे होगें। इसके साथ ही यज्ञ, सत्संग, अध्ययन-अध्यापन, स्वाध्याय, ज्ञान-विज्ञान की उन्नति के कार्य भी आरम्भ होकर अनेक सफलतायें प्राप्त कर ली गईं होगीं और पांच वर्ष पश्चात इनको सामान्य जीवन व्यतीत करने में किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं रही होगी। यदि कभी कोई समस्या आती होगी तो उसका समाधान वेद के आधार पर निकल जाता होगा। आगे सृष्टि किस प्रकार आगे बढ़ी इसका कुछ इतिहास तो उपलब्ध है व अनुमान से भी उसे जाना जा सकता है।

यह भी चर्चा कर लेना समीचीन है कि वैदिक प्राचीन साहित्य व बाद के स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों से यह ज्ञात नहीं होता कि अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा आदि चार ऋषियों ने परस्पर या ब्रह्माजी से तीन-तीन वेदों के ज्ञान का आदान-प्रदान किया अथवा नहीं। यह भी विदित नहीं होता है कि क्या सृष्टि के आदि काल में उत्पन्न अन्य स्त्री व पुरूषों को इन्होंने वेदाध्ययन-अध्यापन कराया अथवा नहीं। जैसा कि सुविदित तथ्य है कि कोई भी विद्वान खाली नहीं बैठ सकता, वह भी तब, जब कि उसके आस-पास अशिक्षित-ज्ञानेच्छु व अज्ञानी लोग हों। अतः यदि इन ऋषियों का ब्रह्माजी को ज्ञान प्राप्त कराने के एकदम बाद संसार से प्रस्थान न हुआ होगा, तो हमें लगता है कि निश्चित रूप से इन्होंने पूर्व ही परस्पर वा ब्रह्मजी से अन्य-अन्य तीन वेदों का ज्ञान प्राप्त कर अध्यापन व पढ़ाने का कार्य अवश्य किया होगा। इन ऋषियों ने ब्रह्मजी की भांति विवाह करके अपनी सन्तति आगे बढ़ाई या नहीं, यह भी पता नहीं चलता। इन चार ऋषियों के बारे में हमारा वैदिक साहित्य मौन क्यों हैं, यह रहस्यमय प्रतीत होता है। यहां विद्वानों से अपने विवेक से इस समस्या का समाधान अपेक्षित है। एक अन्य प्रश्न भी सामने है। सृष्टि के आदि काल युवा पुरूषों के समान युवती स्त्रियां भी अवश्य उत्पन्न हुई होगीं। इन्हें भी ब्रह्माजी ने पुत्रीवत् वा भगिनीवत् वेदों का ज्ञान दिया होगा। यद्यपि वैदिक परम्परा में स्त्रियों को स्त्रियों से ही ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा है, अतः यह अपवाद स्वरूप हुआ प्रतीत होता है, क्योंकि सृष्टि के अमैथुनी होने जैसा यह अपवाद आवश्यक था। ब्रह्माजी से वेदों का ज्ञान प्राप्त कर लेने के पश्चात इन स्त्रियों ने स्त्रियों को अध्ययन कराना आरम्भ कर दिया होगा, ऐसी सम्भावना प्रतीत होती है। इस लेख में हमने वेदों के आविर्भाव पर विचार कर यह जाना है कि ईश्वर से चार ऋषियों को ज्ञान प्राप्त हुआ और उसके पश्चात ब्रह्माजी सहित पांच ऋषि चतुर्वेदी अर्थात चारों वेदों के ज्ञाता हो गये। ईश्वर वेदों का ज्ञान दे सकता है व देता है, इस पर भी विचार किया गया है। हम समझते हैं पाठक व विद्वान हमारे विचारों पर अपनी सहमति व प्रतिक्रियाओं से अवगत करायेगें।

196 चुक्खूवाला ब्लाक-2, देहरादून-248001, फोनः 09412985121

भाजपा नेता सांसद श्री नवजोत सिंह सिद्धु एवम् श्री नितिन गडकरी से भेंट

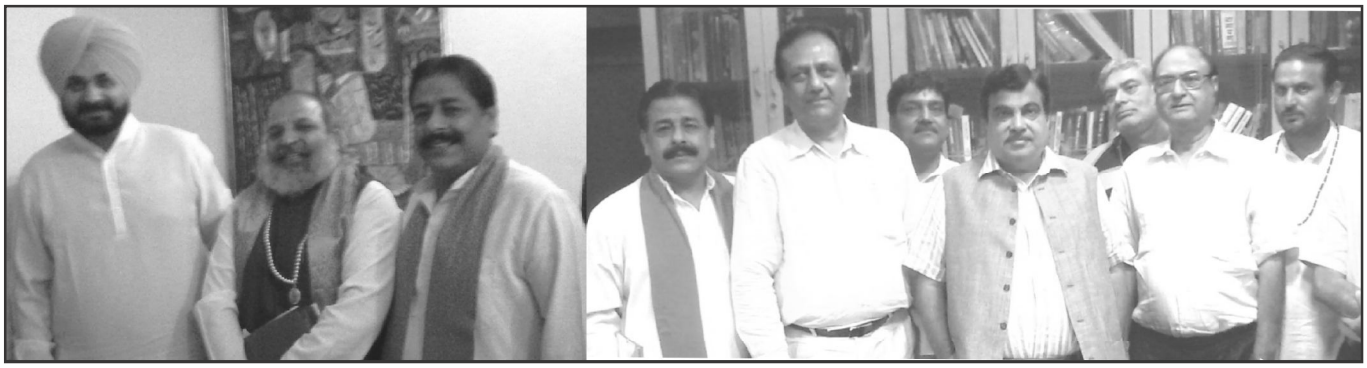

सोमवार 12 अगस्त 2013, यूनाइटेड हिन्दू फ्रंट के प्रतिनिधि मंडल में आर्य नेता डॉ. अनिल आर्य, शिवसेना के श्री जय भगवान गोयल, हिन्दू महासभा के श्री सी.पी. कौशिक, सनातन धर्म के श्री रजनीश गोयंका ने बीजेपी नेता सांसद श्री नवजोत सिंह सिद्धु एवम् श्री नितिन गडकरी से भेंट की।

दादुपुर करनाल में युवा संस्कार समारोह सम्पन्न

सोमवार 12 अगस्त 2013, आर्य समाज दादुपुर, करनाल में युवा संस्कार समारोह श्री सतेन्द्र कुमार मोहन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। चित्र में श्री शैले चौधरी का स्वागत करते श्री सतेन्द्र कुमार मोहन, श्री स्वतन्त्र कुकरेजा, श्री हरेन्द्र चौधरी, श्री मलखान सिंह आर्य, श्री रोशन आर्य, श्री अजय आर्य, श्री सूबे सिंह आर्य, श्री भोपाल सिंह आर्य एवम् श्रीमती शशि आर्या।

बिहार में युवा संस्कार सम्पन्न एवं जम्मु कश्मीर हाऊस पर विरूद्ध प्रदर्शन

आर्य समाज गया, बिहार में युवा संस्कार समारोह श्री नवल किशोर शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्री भारतेन्दु आर्य ने मंच संचालन किया। द्वितीय चित्र में शनिवार 11 अगस्त 2013, विश्व हिन्दू परिषद् के तत्वावधान जम्मू कश्मीर हाऊस पर जम्मू किशतवाड़ा में हिन्दूओं पर की गई हिंसा के विरूद्ध श्री बृज मोहन सेठी के नेतृत्व में प्रदर्शन किया गया। श्री संदीप आहुजा, श्री विनोद बंसल आदि भी उपस्थित हुए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की विशेष बैठक एवं डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया की पुस्तक का विमोचन

रविवार 4 अगस्त, 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली की विशेष बैठक आर्य समाज, पटेल नगर, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। बैठक में युवा संस्कार अभियान चलाने, राष्ट्रीय अधिवेशन को सफल बनाने पर विचार हुआ। चित्र में डॉ. अनिल आर्य के साथ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्री शिशु पाल आर्य, श्री सन्तोष शास्त्री, श्री महेन्द्र भाई जी, श्री धर्मपाल आर्य, श्री राजीव कान्त, श्री मायाराम शास्त्री व श्री यशोवीर आर्य। द्वितीय चित्र में अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान में आर्य समाज, बी ब्लॉक, जनकपुरी, दिल्ली में डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया की पुस्तक के विमोचन का दृश्य। डॉ. कथूरिया के साथ आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री एवं डॉ. देवराज पथिक।

आर्य समाजों के निर्वाचन

1. आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश, पार्ट-1, नई दिल्ली के चुनाव में **प्रधान**-श्री इन्द्रसेन साहनी, **मन्त्री**-श्री राजेन्द्र कु. वर्मा व **कोषाध्यक्ष**-श्री प्रताप गुलयानी चुने गये।
2. आर्य समाज, हापुड़ के चुनाव में **प्रधान**-डा.विकास आर्य, **मन्त्री**-श्री अशोक आर्य व **कोषाध्यक्ष**-श्री ज्ञानेन्द्र आर्य चुने गये।
3. आर्य समाज, भोम, भोरगढ़, देहरादून के चुनाव में **प्रधान**-श्री विशम्भर दयाल, **मन्त्री**-श्री सुभाष चन्द व **कोषाध्यक्ष**-कै.जगमोहन सिंह चुने गये ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में ''युवा संस्कार अभियान'' का भव्य शुभारम्भ

शनिवार 10 अगस्त 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली के तत्वावधान में नई पीढ़ी को आर्य संस्कृति से संस्कारित करने के उद्देश्य से युवा संस्कार अभियान का शुभारम्भ आर्य समाज, प्रताप नगर, दिल्ली से किया गया। चित्र में विधायक श्री राजेश जैन, डॉ. अनिल आर्य एवम् समाज के मन्त्री केवल कृष्ण सेठी, श्री महेन्द्र भाई जी ने उद्बोधन दिया।

आर्य समाज सफदरगंज एन्कलेव एवम् दुर्गापुरी में युवा संस्कार समारोह सम्पन्न

शनिवार 10 अगस्त 2013, आर्य समाज सफदरगंज एन्कलेव नई दिल्ली में युवा संस्कार समारोह श्री रवि देव गुप्ता जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्री महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया। श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने संचालन किया। डॉ. अनिल आर्य, जस्टिस श्री आर.एन. मित्तल, श्री चतर सिंह नागर, श्रीमती नीता खन्ना, श्री स्वदेश कुमार शर्मा ने सम्बोधित किया। श्री के.एल. राणा ने आभार व्यक्त किया। द्वितीय चित्र में दुर्गापुरी, शाहदरा, दिल्ली में आयोजित समारोह में सांसद श्री जयप्रकाश अग्रवाल का स्वागत करते डॉ. अनिल आर्य, श्री राम कुमार सिंह, श्री महेन्द्र भाई, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री विनोद राणा आदि। पंडित घनश्याम प्रेमी के मधुर भजन हुए। अध्यक्षता श्री हरि ओम बंसल ने की एवम् मंच संचालन श्री राम पाल, एडवोकेट ने किया।

बाल्मिकी मन्दिर नरेला में युवा संस्कार समारोह सम्पन्न

शनिवार 10 अगस्त 2013, बाल्मिकी मन्दिर, नरेला, दिल्ली में युवा संस्कार समारोह श्री मनोहर लाल चावला की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्री वीरेन्द्र मान मुख्य अतिथि रहें। श्री महेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ करवाया। श्री अरूण आर्य ने संचालन किया। डॉ. अनिल आर्य, श्री राम कुमार सिंह ने उद्बोधन दिया। पं. घनश्याम प्रेमी, श्री सूरज गुलाटी के मधुर भजन हुए। श्री दिनेश सिंह आर्य, श्री सौरभ गुप्ता, श्री प्रदीप आर्य, श्री प्रणवीर आर्य आदि उपस्थित रहे।

आर्य समाज प्रशांत विहार एवं राज नगर पालम का उत्सव सम्पन्न

रविवार 11 अगस्त 2013, आर्य समाज प्रशांत विहार, दिल्ली का वार्षिकोत्सव श्री सुरेश आर्य की अध्यक्षता में सौल्लास सम्पन्न हुआ। स्वामी शिवानन्द जी की वेद कथा हुई एवं श्री प्रताप आर्य के मधुर भजन हुए। चित्र में नवनिर्वाचित प्रधान श्री कृष्णचन्द पाहूजा, मन्त्री श्री मनोहर लाल चुघ का स्वागत करते हुए डॉ. अनिल आर्य, स्वामी शिवानन्द जी, श्री शिव नारायण शास्त्री, श्री विजय अरोड़ा, श्री सोहन लाल मुखी, श्री महेन्द्र अरोड़ा जी। द्वितीय चित्र में आर्य समाज राज नगर, पालम, नई दिल्ली का उत्सव एवम युवा संस्कार समारोह सौल्लास सम्पन्न। आचार्य अर्जुन देव वर्णी ने यज्ञ करवाया। श्री शिशु पाल आर्य एवं श्री रामनिवास के मधुर भजन हुए। चित्र में समाज के प्रधान श्री भगत सिंह राठी एवं मन्त्री श्री हंसराज को सम्मानित करते हुए डॉ. अनिल आर्य।

शोक समाचार:- विनम्र श्रद्धाजंलि

1. श्रीमती उर्मिला शर्मा (धर्मपत्नि डा.गणेशदत शर्मा, गाजियाबाद) का गत् दिनों निधन हो गया ।
2. माता भगवान देवी जी (योगधाम, फरीदाबाद) का गत् दिनों निधन हो गया।

युवा उद्घोष की विनम्र श्रद्धाजंलि

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970